संपादकीय

सभ्यता तथा विकास ये दोनों शब्द जितने बहुआयामी हैं, उतने ही मायावी और भ्रामक भी। मानव समुदाय के विकास का इतिहास समाज के बहुस्तरीय गठन तथा निर्धारित नियमों व परंपराओं के अनुसार संचालन का इतिहास रहा है। राज्य के नियमों के तहत सुचारु संचालन हेतु तत्कालीन समय, काल व परिस्थिति के अनुरूप कई व्यवस्थाएं विकसित हुईं। जिनमें से कई समाज/राज्य के विकास की प्रक्रिया में अप्रासंगिक होकर इतिहास के पन्नों में तिरोहित हो गईं और कई व्यवस्थाएं आवश्यकतानुरूप अपने आपको ढालते हुए आज भी उपयोगी बनी हुई हैं।

लोकतंत्र इन्हीं व्यवस्थाओं में से एक प्रमुख तथा एक हद तक कारगर व्यवस्था है। पिछले दिनों ही हमने अपने देश के लोकतंत्र का सप्तचक्रीय मैराथन महापर्व मनाया है। फ्रांस के विचारक अनातोले के अनुसार कोई भी राष्ट्र अपने लोक विश्वासों तथा परंपराओं पर ही जीवित रहता हैं। यद्यपि ऐतिहासिक दृष्टकोण से अन्य देशों की तुलना में हमारा लोकतंत्र अभी अल्पवयस्क ही है किंतु दिनोंदिन, चुनाव दर चुनाव जिस तरह से लोकतंत्र की धवल परंपराएं ध्वस्त हो रही हैं यह चिंताजनक भी है और खतरनाक भी। चुनाव के दरमियान जिस तरह से पार्टियां व प्रत्याशी देश तथा समाज के महत्वपूर्ण मुद्दों से हटकर एक-दूसरे पर परिवार, जाति, धर्म, चरित्र, शिक्षा, व्यक्तिगत रुचियों आदि पर अनरगल आरोप-प्रत्यारोप करते हुए सभ्यता की मर्यादाओं को लांघकर ताबड़तोड़ निजी प्रहार करते रहे, इस मंजर को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि इससे बेहतर तो जनजातीय समुदायों में सरदार चुनने की प्रक्रिया ज्यादा उचित थी।

साक्षात्कार

पारंपरिक गोंड कला में छलकते काले सफेद रंग

प्रतिष्ठित गोंड कलाकार **जापानी श्याम** से **कुसुमलता सिंह** की बातचीत

परिचय--- जापानी श्याम गोंड चित्रकला में ख्याति प्राप्त नाम है। इन्होंने पारंपरिक गोंड कला में रंगों के संयोजन में जिस तरह काले के साथ सफेद का प्रयोग किया है वह एक उदाहरण है। गोंड कला इन्हें विरासत में अपने पिता जनगढ़ श्याम और माता ननकुसिया श्याम से मिली। जनगढ़ श्याम जिनके बनाए चित्र आदिवासी संस्कृति के प्रतीक माने जाते हैं और जिन्होंने गोंड कला में सर्वप्रथम कागज और कलम का प्रयोग किया वह शैली जनगढ़ कलम के नाम से जानी गयी। जापानी श्याम ने जिस लगन और कल्पनाशीलता से माता-पिता की इस विरासत को आगे बढ़ाते हुए उसका परिचय अपने चित्रों में दिया है वह काबिले तारीफ़ है। इनका जापानी नाम पड़ने के विषय में भी जो कहानी है वह भी बेहद दिलचस्प है। हुआ यों कि जब उनके पिता जनगढ़ श्याम पहली बार अपनी गोंड कला के प्रदर्शन के लिए जापान गए तो उनके लौटने पर उनकी इस बिटिया का जन्म हुआ और लोगों ने जनगढ़ श्याम से कहा कि यह तो जापानी आ गई इस तरह यह जापानी नाम पड़ा।

जापानी श्याम
पता- प्लॉट न.-22, नियर दशहरा ग्राउंड, जवाहर चौक, भोपाल, म.प्र.
मो. 075662-42508

कुसुमलता सिंह
प्रबंध संपादक 'ककसाड़'
मो. 099682-88050

प्र. लंबे समय से आप गोंड कलाकृति का सृजन कर रही हैं। इस पूरी कलायात्रा को आप किस प्रकार देखती हैं?

उ. मैं बचपन से ही चित्रों की दुनिया के बीच रही हूं। अपने पिता जनगढ़सिंह श्याम जो कि प्रख्यात गोंड कलाकार थे उनकी कला और उनके कलात्मक अनुराग को मैं देखती थी। मैं अपनी मां ननकुसिया श्याम को भी देखती थी कि वे पिता को चित्र बनाते हुए उससे जुड़ी रहती थीं। यहीं से मेरी गोंड कला के प्रति अभिरुचि का आरंभ हुआ। मैं भी बचपन में बच्चों की तरह चित्र बनाती थी। उस चित्र को सबको दिखाती थी। बच्चे की कला देख कर सब मुझे प्रोत्साहित करते थे। पर मेरे पिता ने महसूस किया कि मैं अच्छी परिकल्पना से गोंड के पारंपरिक चित्र भी बनाती हूं। उन्होंने मुझे बहुत बढ़ावा देना शुरू किया। मुझे याद है कि सन् 1999 में मेरे पिता ने मेरी कला के प्रति रुचि देखते हुए एक बार मुझे कागज-कलम और ब्रश पकड़ाया और बोले कि कुछ बनाओ। मैं लगभग ग्यारह साल की थी मैंने जो जी में आया उसे बनाकर पिताजी को पकड़ा दिया। उसे मेरे पिता ने दिल्ली की एक चित्रकला प्रतियोगिता में भेज दिया। और मुझे उस चित्र पर ही कमलादेवी अवार्ड मिला। मेरी कलायात्रा कुछ ऐसे ही चल पड़ी जो अब गोंड की परंपरा, उनके भित्ति-चित्र की कलाओं, संस्कृति, जनजातीय त्यौहार, जंगल-फूल-डाली-टहनी, पशु-पक्षी, उनके रंग या पूरा का पूरा जंगल-जीवन ही मेरी कलायात्रा का हिस्सा रंग और रेखाओं में बन गए। मेरे कलाकार बनने में मेरे पिता और मेरी मां जिन्होंने मेरे पिता की असामयिक मृत्यु के बाद हम भाई-बहनों को संभाला उनका बहुत योगदान है। मैं यहां बताना चाहूंगी कि मेरी मां भी प्रतिष्ठित गोंड कलाकार हैं। पहले मैं अपने पिता की चित्रकला से प्रभावित होकर उनके जैसे ही चित्रों का संयोजन करती थी। पर बाद में मुझे लगा कि मेरी अपनी शैली होनी चाहिए। यह सोचकर मैंने पारंपरिक कला को तो अपना आधार बनाया ही उसके साथ ही उसमें नए प्रयोग भी किए। प्रयोग करते हुए जब मेरी रचना मुकम्मल तैयार होती है तो चित्र कैनवस पर